भारत के नव–निर्माण में महात्मा गाँधी का योगदान

रंजीत कुमार

गाँधीजी के कथनानुसार ''भारत का हृदय कलकत्ता की गलियों में नहीं है और न ही बम्बई की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं में है उनका हृदय देहात में है। किसानों की टूटी–फूटी झोपड़ियों में है, हरे–भरे खेतों को देखकर ही यहाँ के लोगों को शांति मिलती है।'' गाँधीजी ने भारत के जिस क्षेत्र को भारत का हृदय कहा था, उस क्षेत्र में भारत की 78.2 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, जिसमें अधिकांश की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। गाँधीजी के ग्रामीण विकास संबंधी विचार और कार्यक्रम उनके 18 सूत्री साबरमती कार्यक्रम 1920 और सेवाग्राम 1934 में स्पष्टतया दृष्टिगोचर होते हैं। गाँधीजी हमेशा सर्वोदय का सपना देखते थे वे चाहते थे कि गांव के लोग आत्मनिर्भर बने और लोगों में स्वदेशी की भावना जागृत हो, अमीर और गरीब के बीच आर्थिक विषमता में कमी लाई जाए और गांवों के विकास को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाए, वे गरीब से गरीब का उत्थान चाहते थे, इसलिए उनका विचार था कि देश का आर्थिक भविष्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित हो, इसलिए गाँधीजी कुटीर और ग्रामोद्योग पर बल देते थे उन्होंने ''हाथ से कमाओ और सीखो'' पर बल दिया।